CBSE Class 10 - Hindi A

Sample Paper - 02

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न-पत्र भें चार खंड हैं - क, ख, ग औय घ ।
- सबी खंडों के प्रशनों उत्तर देना अनिवार्य हैं।
- यथासंभव् प्रत्येक खंड के प्रशनों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रशनों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंको के प्रशनों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (10)**

   हरियाणा के पुरातत्व विभाग द्वारा किए गए अब तक के शोध और खुदाई के अनुसार लगभग 5500 हेक्टेयर में फैली यह राजधानी ईसा से लगभग 3300 वर्ष पूर्व मौजूद थी। इन प्रमाणों के आधार पर यह तो तय हो ही गया है कि राखीगढ़ी की स्थापना उससे भी सैकड़ों वर्ष पूर्व हो चुकी थी।

   अब तक यही माना जाता रहा है कि इस समय पाकिस्तान में स्थित हड़प्पा और मोहनजोदड़ो ही सिंधुकालीन सभ्यता के मुख्य नगर थे। राखीगढ़ी गाँव में खुदाई और शोध का काम रुक-रुक कर चल रहा है। हिसार का यह गाँव दिल्ली से मात्र एक सौ पचास किलोमीटर की दूरी पर है। पहली बार यहाँ 1963 में खुदाई हुई थी और तब इसे सिंधु-सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर माना गया। उस समय के शोधार्थियों ने सप्रमाण घोषणाएँ की थीं कि यहाँ दबे नगर, कभी मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से भी बड़े रहे होगें ।अब सभी शोध विशेषज्ञ इस बात पर सहमत हैं कि राखीगढ़ी, भारत-पाकिस्तान और अफगानिस्तान का आकार और आबादी की दृष्टि से सबसे बड़ा शहर था। प्राप्त विवरणों के अनुसार समुचित रूप से नियोजित इस शहर की सभी सड़के 1.92 मीटर चौड़ी थीं। इनकी चौड़ाई कालीबंगा की सड़कों से भी ज्यादा है। एक ऐसा बर्तन भी मिला है, जो सोने और चाँदी की परतों से ढका है। इसी स्थल पर एक 'फाउंड्री' के भी चिह्न मिले हैं। जहाँ संभवतः सोना ढाला जाता होगा। इसके अलावा टैराकोटा से बनी असंख्य प्रतिमाएँ, ताँबे के बर्तन और कुछ प्रतिमाएँ और एक 'फर्नेस' के अवशेष भी मिले हैं। मई 2012 में 'ग्लोबल हैरिटेज फंड' ने इसे एशिया के दस ऐसे विरासत-स्थलों की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का खतरा है।

   राखीगढ़ी का पुरातात्विक महत्व विशिष्ट है। इस समय यह क्षेत्र पूरे विश्व के पुरातत्व विशेषज्ञों की दिलचस्पी और जिज्ञासा का केंद्र बना हुआ है। यहाँ बहुत से काम बकाया हैं जो अवशेष मिले हैं, उनका समुचित अध्ययन अभी शेष है। उत्खनन का काम अब भी अधूरा है।

i. अब सिंधु-सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर किसे मानने की संभावनाएँ हैं?
ii. यह किस प्रकार स्पष्ट होता है कि नगर व्यवस्था विकसित थी ?
iii. राखी गढ़ी को विरासत-स्थलों में क्यों स्थान दिया गया है ?
iv. विशेषज्ञ राखीगढ़ी में विशेष रुचि क्यों ले रहे हैं?
v. राखीगढ़ी किस राज्य में है?
vi. गद्यांश का उपर्युक्त शीर्षक लिखिए।

Section B

2. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- (4)**

i. इसका क्या सबूत कि उस जमाने में बोलचाल की भाषा प्राकृत न थी? (वाक्य-भेद लिखिए।)
ii. दोपहर हो गई और कोई बच्चा खेलने नहीं निकला। (मिश्र वाक्य में बदलिए।)
iii. रमा शहर जाकर बीमार हो गई। (संयुक्त वाक्य में बदलिए।)
iv. पानवाला एक काला मोटा आदमी था जो खुशमिजाज़ था। (सरल वाक्य में बदलिए)

3. **निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए- (4)**

i. हरेन्द्र ने पुस्तक पढ़ ली है। (कर्मवाच्य में)
ii. वे नहीं खेलते। (भाववाच्य में)
iii. छात्रों से चुप नहीं बैठा जाता। (कर्तृवाच्य में)
iv. देवेन्द्र द्वारा मेरे लिए पुस्तकें लाई गईं। (कर्तृवाच्य में)

4. **निम्नलिखित रेखांकित पदों का परिचय दीजिए- (4)**

i. काले बादलों की गरज सुनकर मैं तेज भागा।
ii. आजकल हमारा देश प्रगति के मार्ग पर बढ़ रहा है।
iii. आजकल संस्थाओं द्वारा जनहित के अनेक कार्य किए जा रहे हैं।
iv. यदि किसी को अपने देश से प्रेम है तो उसे अपने देश के मनुष्य, पशु, पक्षी, लता आदि सबसे प्रेम होगा।

5. **निम्न प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- (4)**

i. करुण रस' का स्थायी भाव लिखिए।
ii. 'उत्साह' किस रस का स्थायी भाव है?
iii. 'रौद्र' रस का एक उदाहरण दीजिए।
iv. सरकंडे से हाथ-पांय और मटके जैसो पेट।
पिचके पिचके गाल दोउ मुंह तो इण्डिया गेट। में रस बताइए।

Section C

6. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (6)**

अपनी जिंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरंभिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के हैं जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था गुजार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था। एक-दो को छोड़कर उनमें से कोई भी पात्र मेरे परिवार का नहीं हैं। बस इनको देखते-सुनते, इनके बीच ही मैं बड़ी हुई थी लेकिन इनकी छाप मेरे मन पर इतनी गहरी थी, इस बात का अहसास तो मुझे कहानियाँ लिखते समय हुआ। इतने वर्षों के अंतराल ने भी उनकी भाव-भंगिमा, भाषा, किसी को भी धुंध आला नहीं किया था और बिना किसी विशेष प्रयास के बड़े सहज भाव से वे उतरते चले गए थे।

i. लेखिका का कौन सा प्रसिद्ध उपन्यास है ?
ii. 'उपन्यास में पात्र जीवित होने का अर्थ है।
iii. महानगरीय फ्लैट कल्चर ने जीवन को कैसा बना दिया है ?

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

i. भादों की अंधेरी रात्रि में भी बालगोबिन भगत की संगीत साधना किस प्रकार उन्हें तथा अन्य लोगों को प्रभावित करती थी?

ii. बिना कथ्य के कहानी लिखना संभव नहीं है लखनवी अंदाज़ पाठ के आधार पर व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

iii. आप फ़ादर बुल्के के आदर्श जीवन के किस कार्य से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, जिसके कारण वे आपके लिए प्रशंसनीय हो सकते हैं?

iv. नेताजी का चश्मा पाठ के आधार पर लेखक द्वारा वर्णित कस्बे का चित्रण कीजिए।

v. बिस्मिल्ला खाँ जीवन भर ईश्वर से क्यों माँगते रहे और क्यों ?

8. **निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (6)**

मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाज सुंदर कमजोर काँपती हुई थी
वह मुख्य गायक का छोटा भाई है।
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार
मुख्य गायक की गरज में
वह अपनी पूँज मिलाता आया है। प्राचीनकाल से
गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में

खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लाँधकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है।

i. 'मुख्य गायक की गरज में वह अपनी गूँज मिलाता आया है'- आशय स्पष्ट कीजिए।
ii. संगतकार मुख्य गायक को उसका बचपन किस प्रकार याद दिलाता है?
iii. जटिल तानों के जंगल से कवि का क्या आशय है?

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

   i. "उत्साह' कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है ?

   ii. बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अन्तर है?

   iii. कवि के अनुसार दुविधाग्रस्त व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक स्थिति कैसी होती है? 'छाया मत छूना' पाठ को केन्द्रित रखकर लिखिए।

   iv. 'कन्या' के साथ दान के औचित्य पर अपने विचार लिखिए।

   v. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया ?

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **(6)**

   i. शिशु का नाम भोलानाथ कैसे पड़ा? माता का अँचल पाठ के आधार पर बताइए।

   ii. मूर्तिकार अपने सुझावों को अखबारों तक जाने से क्यों रोकना चाहता था? जॉर्ज पंचम की नाक पाठ के आधार पर बताइए।

   iii. लेखिका को पहली बार अहसास हुआ कि जीवन का आनंद यही चलायमान सौंदर्य है, कैसे? साना-साना हाथ जोड़ि पाठ के आधार पर बताइए।

11. **पश्चिम की ओर बढ़ते कदम** विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए। **(10)**

   - पश्चिम की चमक-धमक,
   - आकर्षण के कारण,
   - बचाव ।

OR

जल ही जीवन है विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए।

- जल का बचाव,
- भावी स्थिति की कल्पना,
- उपाय।

OR

यदि मैं राज्य का मुख्यमंत्री होता विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए।

- मेरी प्राथमिकताएँ,
- शिक्षा में परिवर्तन,
- विकास कार्य ।

12. उत्तराखण्ड आपदा में स्वयं भोगी कठिनाइयों का वर्णन करने हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए। **(5)**

OR

अपने नगर के शिक्षा अधिकारी को पत्र लिखकर विद्यालय में दोपहर के समय वितरित किए जाने वाले भोजन के गिरते स्तर की ओर उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए।

13. चाय विक्रेता हेतु एक विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में बनाइए। **(5)**

OR

पृथ्वी दिवस पर बेहतर भविष्य बनाने हेतु 25-50 शब्दो मे एक विज्ञापन तैयार कीजिये।

CBSE Class 10-Hindi Sample
Paper - 02

Answer
Section A

1. i. हरियाणा के पुरातत्व विभाग के द्वारा राखीगढ़ी को सबसे बड़ा नगर माना गया है। शोध के अनुसार खुदाई में प्राप्त यह नगर व्यवस्था 55000 हेक्टेयर में फैली है। प्रमाणों के अनुसार यह व्यवस्था 33000 वर्ष से भी ज्यादा पुरानी है।
   ii. राखी गढ़ी नगर का क्षेत्रफल मोहनजोदड़ों और हड़प्पा से अधिक था,उसकी सड़कें चौड़ी और अन्य नगरों से जुड़ी थी। उसकी आबादी अधिक एवं व्यवस्था पूर्ण रूप से नियोजित और विकसित थी।
   iii. राखी गढ़ी के नष्ट हो जाने के खतरे के कारण इसे एशिया के 'विरासत-स्थलों' में स्थान मिला है। इसकी खुदाई में टेराकोटा की मूर्तियाँ,ताँबे के बर्तन, सोने -चाँदी की परतों वाला बर्तन आदि मिले हैं जो पुरानी विरासत होने का प्रमाण देते हैं इसलिए सरकार की ओर से उसका विशेष ध्यान दिया जा रहा है।
   iv. विशेषज्ञ इसमें इसलिए रुचि ले रहे हैं क्योंकि इसका समुचित अध्ययन अभी शेष है।
   v. राखीगढ़ी हरियाणा में है।
   vi. राखीगढ़ी: एक सभ्यता की संभावना।

Section B

2. i. मिश्र वाक्य।
   ii. कोई बच्चा खेलने नहीं निकला क्योंकि दोपहर हो गई थी।
   iii. रमा शहर गई और बीमार हो गई।
   iv. पानवाला एक काला मोटा और खुशमिजाज़ आदमी था।
3. i. हरेन्द्र द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।
   ii. उनसे नहीं खेला जाता।
   iii. छात्र चुप नहीं बैठ सकते।
   iv. देवेन्द्र मेरे लिए पुस्तकें लाया।
4. i. **काले-** विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, 'बादलों की विशेष्य का विशेषण।
      गुणवाचक विशेषण, बहुवचन, पुल्लिंग, विशेष्य-'बादलों'।
   ii. **आजकल-** कालवाचक क्रिया विशेषण 'बढ़ रहा है' क्रिया का काल विशेषण।
   iii. **संस्थाओं-** जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक।
   iv. **किसी को-** पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, स्त्रीलिंग / पुल्लिंग, कर्ता कारक।
      पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, एकवचन, पुल्लिंग/ स्त्रीलिंग, कर्ता कारक।
5. i. करुण रस का स्थायी भाव है - शोक।
   ii. वीर रस ।

iii. उस काल मारे क्रोध के तन काँपने उनका लगा। मानो हवा के वेग से सोता हुआ सागर जगा।

iv. हास्य रस ।

Section C

6. i. लेखिका का 'महाभोज' नामक उपन्यास प्रसिद्ध है।

ii. उपन्यास में पात्र जीवित होने का अर्थ यह है कि उनके उपन्यास के पात्र उनके मोहल्ले के हुआ करते थे जिनके चरित्र को लेखिका ने साकार किया हैं।

iii. महानगरीय फ्लैट कल्चर ने जीवन को हमें पड़ोस कल्चर से विछिन्न करके संकुचित,असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

i. भादों की अँधेरी रात्रि में जब बलोगोबिं भगत गाते हुए अपने संगीत में तल्लीन हो जाते थे तब बिजली की चमक और बादलों की गर्जन में भी उनका स्वर सोते हुए लोगों के कानों में पहुँच कर उन्हें जगा देता था | खंजड़ी की आवाज़ के साथ दार्शनिक विचारों से ओतप्रोत उनके गीत सबके मन को मोह लेते थे और व्यक्ति अनजाने ही उनकी ओर खींचा चला आता था |

ii. हमारे मतानुसार कहानी लिखने के लिए कोई ना कोई घटना विचार और पात्र अवश्य होता है। यह तीनों ही कहानी के अत्यावश्यक तत्व हैं। जब तक कहानीकार के मन में कोई विचार नहीं आए,घटनाएं कहानी को आगे ना बढ़ाए तथा पात्र कथा का माध्यम न बने, तब तक कहानी लिखना संभव नहीं है। यशपाल जी ने लखनवी अंदाज व्यंग्य यह साबित करने के लिए लिखा था कि बिना कथ्य के भी कहानी लिखी जा सकती है। परंतु मेरे हिसाब से विचार,घटना और पात्र कहानी के मुख्य तत्व है, जिनके बिना कहानी लिखना संभव नहीं है।

iii. फादर कामिल बुल्के आदर्शों के धनी थे। जब भी किसी के घर कोई उत्सव और संस्कार होते, तो वे बड़े भाई और पुरोहित की तरह सभी को आशीर्वाद देते थे । उनकी बाँहे गले लगाने को उत्सुक रहती थी। ममता और अपनेपन की भावना से भरपूर वह व्यक्ति हर किसी के लिए प्रिय और आदर्श था।

फादर कामिल बुल्के विदेशी थे,फिर भी भारत से उन्हें अत्यधिक प्रेम था और सबसे अच्छी बात कि उनका हिंदी से अधिक लगाव था । उन्होंने हिंदी का भरपूर ज्ञान प्राप्त कर 'राम कथा: उत्पत्ति और विकास' नामक ग्रंथ पूरा किया। उन्होंने कई नाटकों का हिंदी में रूपांतर किया। हिंदी की दशा को देख कर अत्यधिक चिंतित रहते थे। हिंदी को राष्ट्रभाषा का उचित स्थान दिलाने के लिए उन्होंने भरसक प्रयत्न किए। इन्हें कार्यों के द्वारा वे सब के लिए प्शंसनीय हो गए।

iv. कस्बा बहुत बड़ा नहीं था। उसमें कुछ पक्के मकान थे, एक बाजार था, लड़के और लड़कियों का एक स्कूल,सीमेंट का एक छोटा सा कारखाना था। दो ओपन एयर सिनेमा घर और एक नगरपालिका थी।बीच शहर के मुख्य बाजार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा थी।

v. बिस्मिल्ला खाँ जीवन भर ईश्वर से सच्चे सुर की नेमत मांगते रहे क्योंकि वे एक सच्चे कलाकार थे | अपनी कला को पूर्ण करने की ललक उनमें सदा रहती थी | उनकी ईश्वर में सच्ची आस्था थी इसलिए वे ईश्वर से अपने सुरों को अधिक प्रभावशाली बनाने की मांग करते रहे |

8. i. मुख्य गायक की गरज में वह अपनी गूँज मिलाता आया है का आशय यह है कि वह हमेशा से मुख्य गायक के स्वर में स्वर मिलाता है।

ii. संगतकार गायक को अपने सुर से भटकने नहीं देता और भटकाव की स्थिति होने पर मुख्य गायक को सही सुर पर लाकर उसे उसके बचपन की याद दिला देता है।

iii. 'जटिल तानों के जंगल' से कवि का आशय है कि मुख्य गायक कभी-कभी किसी गीत के चरण को गाते हुए उसके अलापों और कठिन तानों में खो जाना या सुर से भटक जाना है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

i. बादल प्यासे लोगों को तृप्त करने, नई कल्पना व नई चेतना को जगाने, ललित कल्पनाओं और क्रान्ति को लाने वाले, निडरता, बिजली जैसी ओजस्विता और शीतलता की ओर संकेत करने वाले तथा नवजीवन और नूतन कविता के अर्थों की ओर संकेत करता है। वह मानव को उत्साह और संघर्ष की ओर प्रेरित करता है और उन्हें परिवर्तन की ओर अग्रसर करता है |

ii. बच्चे की मुसकान सरल एवं स्वाभाविक होती है। उसमें निश्छलता और मासूमियत होती है। मन में किसी के लिए दुर्भावना नहीं होती। जबकि बड़े व्यक्ति की मुसकान परिस्थितियों के अनुसार तय होती है। वह बनावटी भी हो सकती है। उसमें चालाकी, स्वार्थ या किसी के प्रति दुर्भावना भी छिपी हो सकती है।

iii. शारीरिक स्थिति तो देखने में सुखी लगती है। मानसिक स्थिति अत्यधिक दु:खी होती है फिर वह छोटी-छोटी बातों पर दु:खी हो जाता है। कवि के अनुसार मनुष्य ने धन-दौलत, यश, वैभव,मान- सम्मान प्रतिष्ठा आदि के पीछे भाग -दौड़ कर इन सबको एकत्र कर लिया और अपने शरीर को सुखमय बना लिया,परंतु वास्तविक सुख तो मन की शांति का होता है। इन सबसे शारीरिक सुख मिल सकता है मानसिक नहीं। उसके मन में असमंजस की स्थिति बनी होने के कारण दुखों से लड़ने का साहस भी नहीं रह गया है इसलिए उसका मन दुखमय है।

iv. कन्या के दान से अभिप्राय है लड़की की शादी के बाद विदाई। लेकिन 'कन्यादान' शब्द से यह अभिप्राय नहीं है कि उससे हमेशा के लिए संबंध विच्छेद हो गया है। लड़की को अपनी इच्छानुसार वस्तुएँ दी जाती हैं दान की जाती हैं किन्तु उसे कन्या का दान देना नहीं कहा जा सकता। और दान तो किसी वस्तु का किया जाता है और कन्या कोई वस्तु तो है नहीं। उसका अपना एक अलग जीवन होता है जिसमें रुचि, पसंद, इच्छा,अनिच्छा आदि होती है। वह किसी वस्तु की भाँति निर्जीव नहीं है। दान देने के बाद दानदाता का वस्तु से कोई संबंध नहीं रह जाता है, परंतु कन्या का संबंध आजीवन माता-पिता से बना रहता है। कन्या एक वस्तु जैसी कभी भी नहीं हो सकती है इसलिए कन्या को दान देने जैसी बात करना पूर्णतया अनुचित है।

v. गोपियाँ कृष्ण के वियोग की पीड़ा में जल रही थीं, फिर भी उन्हें कृष्ण के लौट आने की आशा थी, किन्तु कृष्ण ने

स्वयं न आकर उद्धव के हाथों योग संदेश भेजा जिससे उनके वियोग की पीड़ा बढ़ गई। और उन्हें कृष्ण की पुरानी यादें आने लगी जिससे उनकी पीड़ा और बढ़ गई।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

    i. शिशु का मूल नाम तारकेश्वर नाथ था। उसके पिता शिवभक्त थे | सुबह नहला-धुला कर वे उसे अपने पास पूजा में बिठा लेते | समीप बिठाकर वे उसके ललाट पर भभूत लगाकर त्रिपुंडाकार का तिलक लगा देते | लम्बी जटाएं होने के कारण वह खासा बमभोला प्रतीत होता | पिताजी शिशु से कहते कि बन गया भोलानाथ | फिर तारकेश्वर नाथ न कहकर धीरे-धीरे उसे भोलानाथ कहकर पुकारने लगे और फिर नाम हो गया भोलानाथ।

    ii. वास्तव में मूर्तिकार सही मायने में एक सच्चा कलाकार नहीं बल्कि पैसों का लालची व्यक्ति था। उसमें देश और देशवासियों के प्रति मान-सम्मान व प्रेम की भावना का नितांत अभाव था | वह पैसों के लिए कुछ भी करने को तैयार था। जॉर्ज पंचम की लाट पर नाक लगाने के लिए उसने अपने देश के महान नेताओं की नाक उतार कर वहाँ लगाने का सुझाव दिया। जब वह इस कार्य में असफल रहा, तब उसने सन् 1942 में शहीद हुए बच्चों की मूर्तियों की नाक उतारने जैसा अत्यंत निकृष्ट सुझाव दिया | जब वह इस कार्य में भी असफल रहा तो अंततः उसने जिंदा नाक काट कर लगाने का सुझाव दिया। वह अपने सुझावों को अखबार वालों तक जाने से इसलिए रोकना चाहता था क्योंकि अगर यह बात जनता तक पहुँच जाती, तो सरकारी तंत्र की नाक तो कटती ही, साथ ही लोग भी मूर्तिकार के विरोध में उठ खड़े होते क्योंकि यह कृत्य भारतीयों के आत्सम्मान को ठेस पहुँचाने वाला था |

    iii. धीरे-धीरे धुंध की चादर छँटने पर लेखिका ने देखा कि सब ओर जन्नत बिखरी पड़ी है। जहाँ तक नज़र जाती खूबसूरती ही खूबसूरती बिखरी हुई दिखाई देती है, उस खूबसूरती को देख लेखिका को बहुत आश्चर्य हो रहा था और वे सोचने लगी कि पलभर में ब्रह्मांड में कितना कुछ घटित हो रहा है। सतत् प्रवाहमान झरने और नीचे वेग से बहती शीतल तिस्ता नदी थी। सामने उठती धुंध और ऊपर मँडराते आवारा बादल लेखिका को आकर्षित कर रहे थे | साथ ही मद्धिम-मद्धिम हवा में हिलोरे लेते प्रियुता और रूडोडेंड्रो के फूल वातावरण को सुगंधित और मोहक बना रहे थे। सब अपनी-अपनी लय, तान और प्रवाह में बहते हुए दिखाई दे रहे थे तब उसे अहसास हुआ कि जीवन का आनंद यही चलायमान सौंदर्य है।

Section D

11. यदि प्राचीन संस्कृति -परंपराओं की बात की जाए तो हम अपनी भारतीय संस्कृति को ही सर्वोपरि मानते हैं किन्तु यदि इतिहास पर नजर डाली जाए तो पाएंगे कि हमारी संस्कृति हमेशा ही दूसरों से प्रभावित रही है। इसी ग्राह्य प्रवृत्ति के कारण भारतीय सभ्यता-संस्कृति पर पाश्चात्य सभ्यता का व्यापक प्रभाव दिखाई पड़ता है।
    भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव है, ऐसा नहीं सोचना चाहिए। पाश्चात्य संस्कृति के सभी पहलू सकारात्मक हैं। अगर उन्हें सोच-समझ कर आवश्यकता के अनुसार सजगता पूर्वक अपनाया जाए तो हमारा देश और उसकी भारतीय संस्कृति भी काफी विकसित होगी। पाश्चात्य संस्कृति के विरुद्ध भाव रखने वाले लोगों को इन

सकारात्मक पहलुओं से दृष्टि पात कराना बहुत आवश्यक है। पाश्चात्य सभ्यता के अंतर्गत केवल पहनावा ही नहीं खान-पान, रहन-सहन सभी शामिल है जैसे - भारतीय संस्कृति का पहनावा सूट, साड़ी, कुर्ता पजामा आदि है, वहीं पश्चिमी संस्कृति का पहनावा पैंट-शर्ट, स्कर्ट-टॉप आदि। जब अंग्रेज लोग भारत में आए तो यहाँ के पहनावे की ओर आकर्षित हुये तभी भारत में कपड़ा उद्योग विकसित हुआ। इसी प्रकार खान-पान में भी पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव दिखाई पड़ता है तो स्वभावतः जब कोई भारतीय विदेश जाता है तो वह भी वहाँ के पहनावे और चमक-धमक की ओर आकर्षित होता है। आज दूसरों के रंग में रंगने को ही आधुनिकता का पर्याय समझा जाने लगा है।

हम पाश्चात्य देशों या विदेशों या अंग्रेजों की आलोचना उनके स्वच्छंद व्यवहार को देखते हुए करते हैं परन्तु उनके विशेष गुणों जैसे-देश प्रेम, ईमानदारी, परिश्रम और कर्मठता को भूल जाते हैं। पूरा विश्व आज भारतीय संस्कृति की ओर उन्मुख है लेकिन युवाओं की दीवानगी चिन्ता का विषय हैं। आज युवा ही अपनी संस्कृति के दुश्मन बने हुए हैं। अगर भारतीय संस्कृति नहीं रही तो वे अपना अस्तित्व ही खो देंगे। युवाओं को अपनी संस्कृति का महत्व समझना चाहिए और उसकी रक्षा करनी चाहिए जिससे भारतीय संस्कृति सुदृढ़ बनी रहे।

OR

जल, जीव-सृष्टि का मुख्य आधार है। जहाँ जल है वहाँ जीवन है। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि जल के बिना जीवन संभव नहीं है। यही कारण है। कि प्रकृति ने जीवों के लिए पृथ्वी पर जल के विशाल भंडार उपलब्ध कराए हैं। मनुष्य-मनुष्येतर, जीव-जन्तु, पेड़-पौधे सभी अपने अस्तित्व के लिए जल पर निर्भर हैं। ऐसे जीवनाधार जल की सुरक्षा और सदुपयोग मनुष्य मात्र का कर्तव्य हैं, किन्तु खेद का विषय है कि भौतिक सुविधाओं की अन्धी दौड़ में फँसा मनुष्य इस मूल्यवान वस्तु को दुर्लभ बनाए दे रहा है ।

जल का मानव जीवन के पग-पग पर महत्व है। बिना जल के हम जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकते जैसे हमें पीने के लिए जल चाहिए; नहाने के लिए जल चाहिए; भोजन बनाने और स्वच्छता के लिए जल चाहिए; खेतों की सिंचाई के लिए जल चाहिए; दूध-दही, घी और मिठाई के स्रोत पालतू पशुओं के लिए जल चाहिए। झोंपड़ी और महल बनाने को, भगवान को मनाने को, पुण्य कमाने को तथा मनोरंजन और व्यापार को भी जल चाहिए। इसलिए जल का एक पर्याय जीवन भी कहा जाता हैं। जल के अभाव में एक क्षण भी नहीं बिताया जा सकता । संसार में स्थित मरुस्थल जल के अभाव का परिणाम दिखा रहे हैं। वहाँ रहने वाले लोगों का जीवन कितना कष्टदायक है । गर्मी के दिनों में इन क्षेत्रों को दोहरी मार पड़ती है एक ओर मानसून की देरी तो दूसरी ओर जल का बढ़ता अभाव। उन्हें बहुत दूर-दूर से जाकर पानी की व्यवस्था करनी पड़ती है ।

आज जीवन की रक्षा करने वाला जल स्वयं ही अपनी रक्षा के लिए तरस रहा है। सुख-सुविधाएँ सँजोने के पागलपन से ग्रस्त आदमी ने जल का इतना दोहन किया है, उसे इतना मलिन बनाया है कि देश में पानी के लिए त्राहि त्राहि मची हुई है। भूगर्भ में जल का स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। गहराई से आने वाला जल खारा और अपेय हो गया है। नदियाँ हमारे कुकर्मों से प्रदूषित ही नहीं हुई हैं, बल्कि समाप्त होने के कगार पर पहुँच चुकी हैं। प्रदूषण के कारण भूमण्डलीय ताप में वृद्धि हो रही है और ध्रुव प्रदेश की बर्फ तथा ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। यह सब महासंकट की चेतावनियाँ हैं जिन्हें मनुष्य अपनी मूढ़ता और स्वार्थवश अनसुनी कर रहा हैं ।आज हालत यह हो गई है कि जिस देश में लोग प्याऊ लगवाते थे, कुएं, तालाब,बावड़ी खुदवाते थे वहाँ के लोगों को पानी खरीद कर पीना पड़ता है। यह कितने दुर्भाग्य की बात है ।

आज जल-संरक्षण आवश्यक ही नहीं अनिवार्य हो गया है। जीना है तो जल को बचाना होगा। उसका सही और नियन्त्रित उपयोग करना होगा। जलाशयों को प्रदूषित होने से बचाना होगा। आज आने वाली पीढ़ी को अगर हम विरासत में कुछ देना चाहते हैं तो हमें जल के दुरुपयोग को रोकना होगा, लोगों में जागरूकता लानी होगी और इसके लिए युद्ध स्तर पर प्रयास करना होगा।

OR

आज के बदलते हुये परिप्रेक्ष्य और युवावर्ग की बढ़ती हुई भागीदारी के कारण मेरे मन में भी जिज्ञासा और ज़िम्मेदारी का एहसास हुआ कि मैं भी अपने समाज और प्रदेश के लिए कुछ करूँ। मैं झारखंड के प्राकृतिक धन सम्पदा से परिपूर्ण राज्य का निवासी हूँ किन्तु मैं अपने प्रदेश को पिछड़ा हुआ देखकर बहुत ही निराश हो जाता हूँ, अतएव लोकतान्त्रिक विधि से मुख्यमंत्री बन कर मैं जनता को संतुष्ट करते हुये अपने सपने को साकार करना चाहता हूँ।
मुख्यमंत्री बनने के पश्चात् मेरी प्राथमिकता यही होगी कि भ्रष्टाचार को यथासंभव जड़ से मिटाने का प्रयास करूं। किसी भी प्रदेश का विकास तब तक रेंगने पर विवश रहेगा जब तक भ्रष्ट लोगों पर अंकुश नहीं लगाया जायेगा। मैं सरकारी व गैर सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचारियों के खिलाफ शिकायत के लिए कुछ फोन नंबर और एक-एक बक्से लगवा दूंगा, जिससे शिकायतकर्ता सीधे फोन पर या पत्र के माध्यम से अपनी शिकायतें मुझ तक पहुँचा सकें। तत्पश्चात मैं विकास से जुड़े विषय जैसे सड़क, बिजली, पानी और रोजगार इन सारे महत्त्वपूर्ण विषयों को खुद अपनी निगरानी में रखूँगा। मेरी यह कोशिश होगी कि विकास से जुड़े कार्यों को निर्धारित समय में और निष्ठा भाव से पूरा करूं। मैं राज्य में उद्योग-धंधों के विकास के लिए उचित प्रारूप तैयार करूंगा सकें। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार को बढ़ावा दूंगा। सरकारी शिक्षण संस्थानों को इतना उन्नत और सुविधा संपन्न बना दूँगा कि लोग बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में भेजने के बजाय सरकारी स्कूल भेजेंगे, शिक्षा को सर्वसाधारण के लिए सुलभ बनाने का पुरजोर प्रयास करूँगा।

प्रदेश की मौलिकता, प्राचीन संस्कृति को बनाए रखने के साथ युवा वर्ग और नारी सशक्तिकरण पर विशेष बल देने, छोटे बालको के लिए भी कल्याणकारी योजनाएँ लागू करूँगा ताकि विकास चहुंमुखी हो। यदि मैं अपने प्रदेश के लोगों के लिए कुछ कर पाया तो खुद को धन्य समझूँगा।

12. ग्राम पोस्ट -पटना, बिहार
२४ मार्च २०१९
प्रिय मित्र गोविन्द
सस्नेह नमस्कार
आशा है आप सपरिवार सकुशल होंगे। हमारा तुम्हारा बहुत दिनों से संपर्क नहीं था किन्तु मैं तुम्हें अपने साथ घटी एक दुर्घटना के विषय में बताना चाहता हूँ कि अभी पिछले वर्ष मैं अपने माता-पिता के साथ चार धाम की यात्रा पर गया था और उत्तराखण्ड में जो भयंकर त्रासदी हुई उसका भोक्ता बना। मैं माता-पिता के साथ केदारनाथ धाम पहुँचा ही था कि 16 जून को बादल फट जाने से उत्तराखण्ड की नदियों में भयंकर जल प्लावन हो उठा और उसने पूरे क्षेत्र को तहस-नहस कर दिया मैं तो ईश्वर की कृपा और स्थानीय लोगों की सहायता से माता-पिता के साथ सकुशल बच गया। ऐसी विषम परिस्थितियों में पुजारी जी ने मुझे अपने घर ठहराया था इसलिए प्राण रक्षा हो गयी । बाद में जो भयंकर त्रासदी टीवी,

समाचार पत्रों में देखी-पढ़ी उससे तो यही प्रतीत हुआ कि हम सच में भाग्यशाली ही थे जो बच पाए हैं।
दो दिनों तक मैं वहीं फँसा रहा क्योंकि वापस आने के सारे रास्ते बन्द हो चुके थे। किन्तु सरकार ने तत्परता दिखाई और उस त्रासदी में फँसे लोगों के लिए राहत कार्य शुरू कर दिया तभी सेना का हेलीकाप्टर वहाँ पहुँचा तब उसकी सहायता से हम तीनों बच पाए और देहरादून तक आ सके। वहाँ से मुझे अपने नगर के लिए रेल मिल गई और मैं सकुशल घर आ गया किन्तु कई दिनों तक मै वहाँ के दृश्य नहीं भूल पाया ।
हम जब मिलेंगे तब विस्तार से चर्चा होगी और मैं तुम्हें अपना अनुभव बताऊँगा । शेष फिर-
आपका मित्र
राहुल

OR

सेवा में,
नगर शिक्षा अधिकारी
मेरठ
विषय- प्राइमरी एवं जूनियर स्कूलों में मध्यावकाश के समय वितरित होने वाले भोजन के गिरते स्तर के संबंध में
महोदय,
मैं आपका ध्यान नगर के प्राइमरी एवं जूनियर हाईस्कूलों में मध्यावकाश के समय विद्यार्थियों को वितरित किए जाने वाले दोपहर के भोजन के गिरते स्तर की ओर दिलाना चाहता हूँ। सरकार प्रति विद्यार्थी जितना पैसा देती है, ठेकेदार उतना खर्च नहीं करता। आप किसी भी दिन आकर देख सकते हैं कि भोजन की गुणवत्ता कितनी खराब है। दाल इतनी पतली होती है कि उसमें पानी है या दाल यह समझ ही नहीं आता। चावल में कंकड़ निकलते हैं और रोटियाँ भी खराब आटे की बनी सप्लाई हो रही हैं। यह भोजन न तो पौष्टिक है और न ही मानकों के अनुरूप | अतः कभी-कभी तो बच्चे इसे खाने से भी मना कर देते हैं। वे किसी भी साप्ताहिक खाद्य सारणी का पालन नहीं करते ,जो मन में आता है देर सवेर पहुँचाते हैं और बच्चों को घुड़कते, डाँटते भी है। वे जो भी भोजन लाते हैं वह पूरा भी नहीं पड़ता और कई बच्चों को ऐसे ही जाना पड़ता है।
मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि भोजन के स्तर को बढ़ाने का आदेश सम्बन्धित ठेकेदार को दें या किसी अन्य को ये कार्य सौंपे अन्यथा यह योजना अपने उद्देश्य में सफल न हो सकेगी।
आशा है आप मेरी प्रार्थना पर ध्यान देंगे।
भवदीय
गोविन्द मेहता
78/4
लक्ष्मी नगर
नई कालोनी
मेरठ
दिनांक 17 जनवरी, 2019

13.

200 ग्राम केवल 35 रूपये में

सुस्ती हटाए, ताज़गी लाए

चंचल चाय के संग

भर लो जीवन में उमंग।

चंचल चाय

सबकी पहली पसंद

एक अच्छी सुबह के लिए

चंचल चाय पीजिए

और पूरे दिन ताजगी का अहसास किजीए

न्यु बस स्टेड राजगढ़ अलवर

OR

कर पर्यावरण की रक्षा मनाएँगे पृथ्वी दिवस।

तभी तो होगा सुरक्षित और बेहतर भविष्य ।